'सोशल मीडिया या शोषण मीडिया'
वो कहते हैं, न कि जब आप किसी चीज का अत्यधिक इस्तेमाल करने लग जाते हैं, तो इसके नाकारात्मक पहलू नजर आने लग जाते हैं, जिस पर शुरूआत में न तो हमारी नजर जाती है, और न ही हम इस बारे में सोच पाते हैं, परिणामस्वरूप हमारा भटकाव होता है , और चीजें भटकते हुए हमारे लिए वरदान के बजाय अभिशाप बन जाती हैं| और इसी सन्दर्भ की अगली और वर्त्तमान कड़ी है, 'सोशल मीडिया' | पता है, सालों पहले १९६९ में 'अर्पानेट' के आने पर जब इसकी शुरूआत हुई, तो इसका उद्देश्य; सूचना प्रौद्योगिकी के जरिये लोगों तक आसानी से पहुँचने, और वो सभी चीजें जो लोगों तक पहुँचने में काफी समय लगता, तथा उसका पहुँचना; (आसपास होने वाली नवीनतम घटनाओं को व्यक्तिगत या सामूहिक रूप में पहुँचने पर) साकारात्मक बदलाव हेतु अत्यंत आवश्यक था | हमने इसका अनेक क्षेत्रों में बखूबी इस्तेमाल किया, उदाहरण के तौर पर; कम्युनिकेशन, ई-कॉमर्स , सेल्स प्रमोशन, वगैरह-वगैरह |
शुरूआत में हमने वो सारी चीजें की जिसके प्रभाव और नतीजे अच्छे रहे, जैसे वो सभी लोग जिनसे व्यक्तिगत रूप से बात करना, साझा करना या कहना संभव नहीं था, इसके माध्यम से संभव हो पाया | किसी सामाजिक अभियान को अंजाम तक पहुँचाने में इसकी अहम् भूमिका रही, सोच या समझ के प्रसार के लिए इसका समुचित इस्तेमाल किया गया, या दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि समाज कि लिए एक ऐसा सामाजिक साधन, जिसके माध्यम से आसानीपूर्वक इसका(सोशल मीडिया) इस्तेमाल करने वालों तक विचार का प्रसार किया जा सके | मगर वर्षों तक इसके लगातार फैलाव के बाद एक ऐसा समय (जो कि वर्त्तमान में चल रहा है) आया जब हमने सिर्फ और सिर्फ इसका (सोशल मीडिया) गलत इस्तेमाल किया, वो भी; 'हद से ज्यादा', और वो हम ही हैं, जिनके वजह से आज यह मीडिया सोशल से शोषण मीडिया बन गया | हाल की बात है, अपने ही देश का एक राज्य बिहार के जिला भागलपुर, नाथनगर में कुछ शरारती तत्वों के आपसी झगड़े का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाल दिया गया, देखते ही देखते इस झगड़े ने साम्प्रदायिक रूप ले लिया और फसाद की जड़ बन गया, जबकि; हकीकत, बिल्कुल इसके परे है | ऐसा करके हम शारीरिक और मानसिक रूप से लोगों का शोषण करते हैं, और बेवजह भ्रम पैदा कर गलत चीजों को बढ़ावा देते हैं, जिससे हमारा शरीर, मन, समाज, घर, परिवार, रिश्ते और धन सभी का ह्रास होता है |
अभी भी बहुत कुछ नहीं बिगड़ा, हम अगर चाह लें तो शुरूआत से शुरू करते हुए मुख्य धारा में लौट सकते हैं, और फिर से इसका सही और समुचित इस्तेमाल करते हुए शांति और समझ के अनोखे मेल को बहाल कर सकते हैं |

"प्रसार जिसकी सामाजिक उत्थान में अहम् भूमिका हो"